

Chapter 5

Question: How can we remove our defects forever?

Krishnamurti: You see how the mind wants to be secure. It does not want to be disturbed. It wants forever and forever to be completely safe, and a mind that wants to be completely safe, to get over all difficulties forever and forever, is going to find a way. It will go to a guru; it will have a belief, it will have something on which to rely and cling; and so, the mind becomes dull, dead, weary. The moment you say, 'I want to get over all my difficulties forever,' you will get over them, but your whole being, your mind, will be dead.

We do not want to have difficulties, we do not want to think, we do not want to find out, to inquire. I wait for somebody to tell me what to do. Because I do not want to be disturbed, I go to somebody who I think is a great man or a great lady or a saint, and I do what he tells me to do, like a monkey, like a gramophone which is repeating. In doing so, I may have no difficulties superficially because I am mesmerized. But I have difficulties in the unconscious, deep down inside me, and these are going to burst out eventually, though I hope they will never burst out. You see, the mind wants to have a shelter, a refuge, something to which it can cling—a belief, a Master, a guru, a philosophy, a conclusion, an activity, a political dogma, a religious tenet. It wants to go to that and hold on to it when it is disturbed. But the mind must be

प्रश्न : हम अपने दोषों को हमेशा के लिए कैसे दूर कर सकते हैं?

कृष्णमूर्ति : आप यह देख सकते हैं कि मन किस प्रकार से सुरक्षित रहना चाहता है। यह किसी प्रकार का व्यवधान नहीं चाहता। यह सदा-सदा के लिए पूर्ण रूप से सुरक्षित बना रहना चाहता है, और ऐसा मन जो पूरी तरह से सुरक्षित बना रहना चाहता है, जो हमेशा के लिए अपनी कठिनाइयों को मिटा देना चाहता है, अवश्य ही इसके लिए कोई उपाय खोज लेगा। यह किसी गुरु के पास जाएगा, किसी मत और विश्वास की शरण लेगा, यह किसी आश्रय को खोज लेगा और उसके सहारे रहेगा, उससे बंध जाएगा, और इस तरह मन असंवेदनशील, मृत और क्लान्त, जर्जर हो जाएगा। जैसे ही आप कहते हैं, "मैं अपनी सारी कठिनाइयों पर सदा-सदा के लिए विजय पा लेना चाहता हूँ" आप उन्हें जीत तो लेंगे परंतु आपकी सारी चेतना, आपका मन मृत हो चुका होगा।

हम कठिनाइयां नहीं चाहते, हम सोच-विचार करना नहीं चाहते, हम खोजना, पता लगाना नहीं चाहते। मैं चाहता हूँ कि कोई मुझे बताए कि मुझे क्या करना है। चूंकि मैं नहीं चाहता कि मुझे कठिनाई हो इसलिए मैं किसी ऐसे व्यक्ति के पास जाता हूँ जिसे मैं महापुरुष या महान स्त्री या संत आदि समझता हूँ और वह मुझसे जैसा कहे वैसा मैं यथावत करता हूँ जैसे कोई बंदर नकल करता है, जैसे कोई ग्रामोफोन बार-बार दोहराता है। ऐसा करने पर ऊपरी तौर पर मुझे कोई कठिनाई नहीं रह जाती क्योंकि मैं सम्मोहित सी अवस्था में होता हूँ। लेकिन अचेतन तल पर, अपने भीतर की गहराइयों में, आखिरकार इनका विस्फोट सुनिश्चित ही है, भले ही मैं आशा करता रहूँ कि ऐसा कभी न होगा। देखिए मन कोई आश्रय, कोई शरण चाहता है, कोई ऐसी वस्तु जिसका सहारा वह ले सके--कोई विश्वास, कोई दिव्यात्मा, गुरु, कोई दार्शनिक सिद्धांत, कोई गतिविधि, कोई राजनीतिक विचार, कोई धार्मिक सिद्धांत इत्यादि। किसी भी तरह का विघ्न सामने आते ही यह उनकी शरण में जाना या ऐसे ही किसी सहारे को पकड़े रखना चाहता है। परंतु मन के अशांत होने में समस्या क्या है? विघ्न आने पर, अशांत होने पर ही, अवलोकन और जांच-पड़ताल करते हुए

Chapter 5

disturbed. It is only through disturbance, through watching, through inquiry, that the mind understands the problem.

The lady asks, 'Can a disturbed mind understand?' A mind that is disturbed and is seeking an escape from the disturbance will never understand. But a mind that is disturbed and knows it is disturbed and begins to inquire patiently into the cause of disturbance without condemning, without translating the causes—such a mind will understand. But a mind which says, 'I am disturbed, I don't want to be disturbed, and so I am going to meditate on nondisturbance,' is a phony mind, a silly mind.

Question: What is internal beauty?

Krishnamurti: Do you know what is external beauty? When you see a beautiful building or a beautiful tree, a beautiful leaf, a lovely painting, a nice person, what happens to you? You say, 'It is beautiful.' What do you mean by 'beautiful'? There must be something beautiful in you to see the beauty outside, must there not? You understand? Please tell that boy. The teacher who is responsible, his housemaster, will please listen to this and take the trouble to tell these boys and girls what we have been discussing. This is far more important than the usual classes.

Please listen. One boy wants to know how to be free forever from all trouble. The other boy wants to know what is internal beauty, and when I ask if you know what external beauty is, you all laugh.

मन समस्या को समझ पाएगा।

एक महिला पूछती हैं, “क्या बखेड़ों से घबराए हुए मन के लिए समझ पाना संभव है?” एक ऐसा मन जो अशांत है और जो उस अशांति से भागने की चेष्टा कर रहा है, उसके लिए समझना कभी संभव नहीं होगा। पर वह मन जो अशांत है और जानता है कि वह अशांत है, और जो धैर्यपूर्वक इस अशांति के कारणों की छानबीन करने लगता है, बिना स्पष्टीकरण का सहारा लेते हुए, बिना कोई निंदा किए उनकी जांच करता है, अवश्य समझ पाता है। परंतु जो मन कहता है, “मैं अशांत हूँ, मैं अशांत नहीं होना चाहता इसलिए मैं अशांत न होने के लिए ध्यान करूंगा”, ऐसा मन अवश्य ही सतही है, मूढ़ है।

प्रश्न : आंतरिक सौंदर्य क्या है?

कृष्णमूर्ति : क्या आप बाहरी सौंदर्य से परिचित हैं? जब आप किसी सुंदर भवन को या खूबसूरत वृक्ष को देखते हैं, जब आप एक सुंदर पत्ती को, खूबसूरत पेंटिंग को, किसी सुंदर व्यक्ति को देखते हैं तो क्या महसूस करते हैं? आप कहते हैं यह 'सुंदर' है। 'सुंदर' से आपका क्या अभिप्राय होता है? बाह्य सुंदरता को आप देख सकें इसके लिए यह आवश्यक है कि आपके भीतर भी कुछ-न-कुछ सुंदर हो, होना चाहिए न? आप समझ रहे हैं न? कृपया प्रश्न पूछने वाले बालक से यह बताएं। जो संबंधित शिक्षक, छात्रावास का??के प्रभारी आदि हों कृपया ध्यान से सुनें और इतना कष्ट उठाएं कि इन बालक-बालिकाओं से वह सब कहें जो हम यहां कह रहे हैं। प्रतिदिन लगने वाली कक्षाओं से यह कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

कृपया ध्यान दें। एक बालक यह जानना चाहता है कि सारी तकलीफों से हमेशा के लिए मुक्त होने का क्या उपाय है। दूसरा यह जानना चाहता है कि आंतरिक सुंदरता क्या होती है, और जब मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या आप बाहरी सुंदरता को

Chapter 5

But if you know that which is beautiful, if you have a feeling for beauty, then you have sympathy, you have sensitivity, an appreciation of what you see—a magnificent mountain or a marvellous view. To have the appreciation of beauty, there must be something in you to appreciate, and that may be inward beauty. When you see goodness, kindness, when you see something lovely outside you, you must have it inside you as well. When you see the lovely curve of the railway bridge across the Ganges, there must also be something in you which sees the beauty of a curve. Most of us do not see beauty outside or inside because we have not got it in ourselves; inside, we are dull, empty, heavy, and so we do not see the beauty in anything, we do not hear the noise of the train going over the bridge, which has its own beauty. When you get used to anything, it loses its meaning for you.

January 8, 1954

जानते हैं तो आप सभी हंसने लगते हैं। परंतु यदि आप सुंदर और सौम्य की पहचान रखते हैं, यदि आपमें सुंदरता की भावना विद्यमान है, तो आपमें सहानुभूति होती है, आपमें संवेदनशीलता होती है, आप जो कुछ भी देखते हैं उसकी प्रशंसा का भाव आपमें होता है—फिर वह चाहे कोई भव्य पर्वत हो या कोई रमणीय दृश्य हो। सौंदर्य की प्रशंसा कर पाने के लिए आपके अपने ही भीतर कुछ ऐसा होना चाहिए जो उसको परख सके, और संभवतः आंतरिक सौंदर्य वही है। जब आप अपने से बाहर भलाई का, उदारता का दर्शन कर पाते हैं, कोई प्यारी वस्तु देख पाते हैं तो आपके भीतर भी उसे होना चाहिए। जब आप गंगा पर बने रेल पुल के मेहराब की खूबसूरती निहारते हैं तो आपके भीतर भी निश्चित ही ऐसा कुछ होता है जो उस मेहराब का सौंदर्य देख रही होता है। हममें से अधिकांश भीतर या बाहर कहीं भी सौंदर्य नहीं देख पाते हैं क्योंकि यह हमारे भीतर ही नहीं होता; अपने भीतर हम नीरस, रिक्त और बोझिल होते हैं और इसलिए हमें किसी भी चीज़ में कोई सौंदर्य नहीं दिखाई देता, पुल पर से गुज़रती रेलगाड़ी का शोर हम नहीं सुनते जिसकी अपनी ही एक खास सुंदरता होती है। जब आप किसी बात के आदी हो जाते हैं तो उसकी अर्थवत्ता आपके लिए मानो खो जाती है।

८ जनवरी, १९५४